OM 17 EDITED_Page 1 and 2 11-11-2014 15:47 Page 4

दुनिया के लिये मिसाल कायम करता आदर्श परिवार

गोपी किशन गुलाब चंद, पेशे से सी.ए. हैं। 1979 में शुरु हुई जी.जी.रांदड़ एण्ड कंपनी मेरी फर्म है। पहले मैं अकेला ही उसमें सी.ए. था लेकिन अभी हम चार पार्टनर हैं जिसमें मेरा बेटा विवेक वो भी सी.ए.है, एक भतीजा मेरा सी.ए. है। नागपुर, औरंगाबाद में भी ब्रांचेज़ हैं। इस तरह चार जगह ब्रांच और हम चार सी.ए. हैं। राजयोग ने मरे मन की तलाश पूरी कर दी। व्यवसाय में आनेवाली कठिनाइयाँ पहले मुझे इरीटेट कर देती थी। राजयोग के ज्ञान नें मुझे मानसिक धरातल पर इतना मजबूत कर दिया है। जिससे अब उनसे मुक्त होकर कार्य करता हुँ। व्यवसाय व सम्बन्ध में मधुरता तथा हर प्रकार से जीवन जैसे आनंदित होकर चल रहा है। वे ओमशांति मीडिया से रूबरू हुए। उनसे बातचीत का कुछ अंश-

प्रश्न: आप माउण्ट आबू में पहली बार कब आये?

उत्तर: 1987 में मैं पहली बार मधुबन आया और उस समय मुझे ज्ञान मिला। वैसे मैं प्रोफेशन से चार्टड एकाउंटेंट हूँ तथा इसके साथ-साथ लायन्स क्लब, माहेश्वरी ग्रुप और बिज़नेस ग्रुप आदि में मैं सोशल वर्क करता था। बचपन से

एक चीज़ की मैं खोज कर रहा था। मुझे स्वयं में कोई ऐसी शक्ति चाहिए थी। आज ये जो गृहस्थी है इसमें स्वार्थ भरा हुआ है और कभी-कभी इस मायावी माहौल में हम फंस जाते हैं, उस समय उसको रोकने की एक शक्ति चाहिए। जब पहली बार मैंने राजयोग शिविर शीलू बहन जी से किया और दस मिनट का जो योग उन्होंने कराया उससे मुझे महसूस हुआ कि यही वो शक्ति है जिसकी मुझे तलाश थी, और उस दिन से मेरी रुचि उसमें बढ़ती गयी। मुझे हर क्षेत्र में इससे मदद मिली। परमात्मा की जो शक्तियां हैं इसका अनुभव मुझे खास दो जगह हुआ। एक तो गृहस्थी में कई बार उतार-चढ़ाव आते हैं, विघ्न आते हैं तो कई ऐसे विघ्न आये थे जिसमें परमात्मा ने बहुत मदद की। दूसरा प्रोफेशन में भी मैंने देखा कि जब हम साइलेंस में बैठते हैं, परमात्मा को याद करते हैं, राजयोग करते हैं उनका आह्वान करते हैं कि आप मेरे साथ हो और हमें मिलकर ये काम करना है तो आसानी से सब काम हो जाता है। सूक्ष्म रूप से परमात्मा हमारे साथ है इसका अनुभव होने लगता है। हमारा तीन भाइयों का परिवार है। तीनों की युगल, उनके बच्चे माताजी सभी इस ज्ञान में चलते हैं। मेरी जो भतीजी है वो अभी समर्पित हुई है और इसके साथ-साथ जो हमारे रिलेशन में हैं उसमें भी लगभग अधिकतर लोग ज्ञान में चलते हैं। छोटे-मोटे टकराव तो चलते रहते हैं लेकिन ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण उनको समझाते हैं तो फिर सब सेट हो जाता है, खींचातानी नहीं होती और ज्यादा टकराव जैसी बातें नहीं होती हैं। जब मैं नया-नया ज्ञान में आया तो मैंने मधुबन में बहुत कुछ सीखा, मधुबन में जिस प्रकार एडमिनिस्ट्रेशन चलता था, कोई भी प्रोग्राम होता था तो उसकी तैयारियां ये सब इंटरनेशनल लेवल पर होने के कारण हम उसका प्रोफेशन में हो, परिवार में हो, परिवार के कोई कार्यक्रमों में हो, सामाजिक कार्यक्रम में हो उपयोग करते हैं और अच्छी तरह से उसका उपयोग होता है उसका रिजल्ट भी बहुत अच्छा आता है। मेरा प्रोफेशन ऐसा है कि इसमें जितना भी आगे जाना है तो बहुत स्कोप है लेकिन एक बार अपना दायरा फिक्स हो गया और सब लोगों को मालूम हो गया जैसे खान-पान की बात आती है तो जब हमारी पार्टियां होती हैं लेकिन लोगों को मालूम हो गया कि ये क्या खाते हैं तो शुरु-शुरु में तो थोड़ी तकलीफ होती है लेकिन बाद में वे ध्यान देने लगते हैं। जब मैं यहाँ आया था तो मेरी आर्थिक स्थिति थोड़ी डाउन थी उस समय मैं मधुबन आने की स्थिति में भी नहीं था, मेरे दोस्त ने मुझे सहयोग दिया इसलिए मैं आया लेकिन जो विकास हुआ उसकी खुशी मुझे तब हुई जब मैंने बिज़नेस कॉन्फ्रेन्स में दो सौ लोगों को लेके आया था मधुबन में कि ये बाबा का रिटर्न है, इस प्रकार प्रोफेशनल लाइफ में विकास होता गया। इस ज्ञान का मैंने दो तरीके से अध्ययन किया है एक भावना तो है ही लेकिन भावना के साथ-साथ मैंने वैज्ञानिक तौर पर इसके प्रभाव का निरीक्षण किया है। जब हम मेडिटेशन में बैठते हैं और जब एकाग्र होते हैं बाबा की शक्तियां मिलती हैं ,इसका फिजीकल प्रभाव हमारे शरीर पर क्या होता है क्या बदलाव आते हैं और वो बदलाव फिर प्रैक्टिकली धीरे-धीरे किस प्रकार डेवलप होते जाते हैं इसका अनुभव मैं हमेशा करता था। इस कारण मेरी मेडिटेशन में रुचि बढ़ती गयी और इसमें मुझे ज्यादा मदद शुरु-शुरु में दादी जानकी जी के क्लासेस से मिली। उनकी बहुत प्रैक्टिकल छोटी-छोटी क्लासेस होती थी जो बहुत आसानी से समझ में आती थी लेकिन उसको प्रैक्टिकल करते समय ऐसा लगता था कि तपस्या है और तपस्या कोई ऐसे बैठ के नहीं है बल्कि हर एक चीज़ को प्रैक्टिकल लाइफ में लाना यही सबसे बड़ी तपस्या है ऐसा मुझे अनुभव होता था।

विवेक जो कि गोपाल किशन के सुपुत्र है उनसे बात हुई में उन्होंने बताया कि -

जब आप पापा के साथ कार्य करते हो तो आपको कैसा लगता है कि हमारा बॉस ही स्वयं फादर है तो आपको कहीं कोई कठिनाई की बात नहीं लगती?

उत्तर: बिल्कुल नहीं, काफी फर्क पड़ता है अगर सिनीयर घर में है उसी सेम प्रोफेशन में तो एक अच्छा बैकिंग रहता है तो उसकी वजह से काफी सारी जो चीज़ें रहती हैं हमारे प्रोफेशन में कॉम्पलिकेटेड चीज़ें जब रहती हैं तो एक मेंटल सपोर्ट रहता है। जिस तरह लौकिक पिता का सपोर्ट है वैसे ही अलौकिक पिता का भी सपोर्ट है तो काफी सरल हो जाता है।

प्रश्न: आपको इस पढ़ाई में कैसे आये क्योंकि आप तो कुछ और करना चाहते थे?

उत्तर: जब मैं सी.ए.फाइनल में था तो तब मुझे ज्ञान पता था जिससे पढ़ाई में भी हमें मदद होती थी। कभी हम टेन्शन में रहते थे तो कुछ परमात्मा के ज्ञान से सोल्वेशन मिल जाता है। मेडिटेशन द्वारा और तब से मुझे ऐसा लगने लगा कि मैंने सी.ए. का फील्ड चुनकर सही किया है ताकि मुझे काफी समय मिलेगा सेवा और मेडिटेशन के लिए क्योंकि सी.ए. और मेडिकल लाइन में एक फर्क है कि वहाँ डॉक्टर को चौबीस घंटे खुद रहना पड़ता है लेकिन सी.ए.स्टाफ के द्वारा काम मैनेज कर सकता है। फिर जो एक्सट्रा समय मिलता है वो हमलोग फिर सेवाओं में देते हैं।

प्रश्न: मेडिटेशन से आपको इस प्रोफेशन में क्या लाभ मिला?

उत्तर: मेडिटेशन से मेरी विल पावर और डिटरमिनेशन पावर बढ़ी और सेवाओं में मुझे इसका बहुत फायदा होता है। हमेशा हम देखते हैं कि सेवा का कोई भी प्लैन करें, संकल्प करें वो परमात्मा जरूर पूरा करवाता है।

प्रश्न: इतने बड़े परिवार में इतने सारे लोगों के साथ आप काम करते हैं तो उसमें आपको कभी उतार-चढ़ाव या स्वभाव-संस्कार में कभी ऊँचा-नीचा नहीं फील होता है?

उत्तर: ये तो परिवार है हमारा और परिवार में तो लगभग सभी सदस्य ज्ञान में हैं तो इतनी ज्यादा कठिनाइयां तो हमें नहीं झेलनी पड़ती हैं लेकिन इसके अलावा हमने एक संस्था बनाई है चेतना एम्पावर फाउंडेशन नाम से अभी दो साल से और उसमें मैंने 80 लोगों को जोड़ा है और उसके द्वारा हम काफी सेवाओं के प्लैन बनाते रहते हैं जैसे व्यसन मुक्ति का कार्य करते हैं, बच्चों के लिए संस्कार शिविर, सेल्फ एम्पावरमेंट तो ये सेवाएं करते समय भी मुझे कई लोगों को हैंडल करना पड़ता है। सब कुछ करते समय लोगों के संस्कार अलग होने के कारण ऊपर-नीचे थोड़ा होता है लेकिन ज्यादा दिक्कत नहीं आती है क्योंकि राजयोग के ज्ञान में हर बात का सालवेशन है।

आणंद-गुज.। 'कर्मयोगी तालीम' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. गीता, चीफ ऑफिसर पंकज बारोट, पूर्व नायब सचिव गुजरात सरकार सी.एम. गोलिक एवं नगरपालिका उपप्रमुख हंसा बहन।

बुरला। सम्बलपुर के सांसद नागेन्द्र प्रधान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्नेहा। साथ हैं पूर्व सांसद प्रमिला बहिदर व अन्य।

सापुतारा। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित नवोदय विद्यालय समिति पुणे डिवीज़न के असिस्टेंट कमिश्नर पी.वी. यान राजू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भानु।

व्यारा। डी.आई. तापी ऑफिसर रणजित सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रंजन।

संगम तीर्थ-बैंगलोर। ''दिव्य संस्कृति सम्भमा'' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध अभिनेत्री सोवकर जानकी, ब्र.कु.गणेश, गायिका हेमा प्रसाद, दादी सरला, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. वीणा तथा भारतीय फिल्म के प्लेबैक सिंगर जमुना रानी।

इटावा-उ.प्र.। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित डॉ विनय, एन.एस. यादव,आर.एम. रोडवेज़, ब्र.कु. नीलम, एस.पी.सिंह,एस.एम. रोडवेज़ तथा अन्य।